## पद १०२

(राग: परज - ताल: केहरवा)

नेति नेति नाहीं येथें शास्त्रप्रसंग। आत्मा असंग। नको कुसंग। साधुचा संग। मन बुद्धि चित्त वाणीचा नाहीं आम्हा संग।।धु.।। आम्ही कूटस्थ देहा जन्म आहे। जलीं आकाश अलिप्त राहे। ज्ञानरूपी ज्ञातता न साहे। येथें पाहिजे जातीचें स्वानुभव अंग। आत्मा असंग। नको कुसंग। साधुचा संग। मन बुद्धि चित्त वाणीचा नाहीं आम्हा संग।।१।। आम्ही जन्मोनि नाहीं जन्म आम्हां। वृद्धि सूतक नाहीं स्वप्न जन्मा। शब्द संबंध नाहीं परब्रह्मा। चिन्मार्तांड जिलें जग भासे तरंग। आत्मा असंग। नको कुसंग। साधुचा संग। मन बुद्धि चित्त वाणीचा नाहीं आम्हा संग।।२।। बहुपुण्य हा दिन उगवला। शिव साम्राज्य पदीं जीव आला। अहा आनंदी आनंद झाला। खेळू गुलाल श्रीगुरुपूर्ण बोधाचा रंग। आत्मा असंग। नको कुसंग। साधुचा संग। नको कुसंग। साधुचा संग। मन बुद्धि चित्त वाणीचा नाहीं आम्हा संग।।३।।